धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

जनवरी 2008

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 157 वां
शुभ जन्म-महोत्सव

नया वर्ष मुबारक हो

नये वर्ष की हमारे सब पाठक गणों को बहुत-बहुत बधाई हो। वैसे तो जिन्दगी का प्रत्येक दिन ही नये वर्ष का आरम्भ है, परन्तु वर्ष के बदलने से 1 जनवरी का महत्त्व बढ़ जाता है। नया वर्ष तभी मुबारक हो सकता है यदि हम आने वाले वर्ष में अपने शारीरिक, मानसिक और हार्दिक विकास के लिए कुछ ऐसे प्रण लें, जो हमें पहले से बेहतर इन्सान बना सकें।

दूसरा हम पिछले वर्ष की अपनी उपलब्धियों और असफलताओं का हिसाब किताब करें कि हमने पिछले वर्ष में क्या खोया है और क्या पाया है। हमारी असफलताओं का सबसे बड़ा कारण हमारा आलस्य अनुराग है, जिसके कारण हम शारीरिक व्यायाम, सैर आदि नियम पूर्वक नहीं कर सकते, जिससे आत्मा तो एक तरफ हमारा शरीर भी स्वस्थ्य नहीं रह सकता, शारीरिक रूप से हानि हमें दूसरे नम्बर पर हमारा स्वाद अनुराग पहुँचाता है, हम ऐसी चीजें न चाहकर भी खा जाते हैं जो हमारे लिए हानिकारक हैं। शरीर को बेहतर बनाने के लिए अपने इन दो शत्रुओं से यदि हम लड़ सकें और अपनी-अपनी कमजोरियों को याद करके उन्हें दूर करने के कुछ साधन ले सकें, तो हम अपनी सेहत बेहतर कर सकते हैं।

अपनी मानसिक शक्तियों को बेहतर करने के लिए हमें अच्छा साहित्य पढ़ने का संकल्प लेना चाहिए। जो पढ़े लिखे हैं वह दूसरों को आधा घण्टा भी पढ़ा सकें तो सेवा तो होगी ही उनकी अपनी मानसिक शक्तियां भी विकसित होंगी। मानसिक शक्तियों को भी ऐसे व्यायाम की आवश्यकता है। बुढ़ापे में जो दिमाग काम करना बन्द करता है, उससे छुटकारा पाने के लिए पढ़ना, पढ़ाना वा विचार विमर्श बहुत आवश्यक है।

तीसरा हमारा सबसे महत्त्वपूर्ण अंग हमारी आत्मा है। यदि उपरोक्त दोनों भाग अर्थात् शरीर वा दिमाग सही रहेगा, तो ही हम आत्मा की सुध ले सकते हैं। आज का युग मशीनी युग है, आदमी भी एक मशीन बनकर रह गया है। सांसारिक काम धंधों से फुरसत निकालनी मुश्किल हो रही है। आत्मा का महत्त्व समझना सबसे कठिन काम है। हम चाहकर भी, संकल्प लेकर भी आत्मा के विकास के लिए कुछ नहीं कर पाते। बेशक हम बड़े-बड़े काम न करें, जो प्रत्येक जन कर भी नहीं सकता। परन्तु हम छोटी-छोटी बातें करके कुछ न कुछ अपने भले का संग्राम कर सकते हैं।

1) सबसे पहले हम कुछ पढ़ने वा अनपढ़ होने की सूरत में किसी और से सुनने का संकल्प लें, वह चाहे आधा घण्टा ही हो, यदि हम ऐसा कर सकेंगे, तो बहुत कुछ अपना भला करने की प्रेरणाएं हमें मिल सकती हैं। 23½ घण्टे हम अपने कामों वा शरीर की जरूरतों के लिए जीते हैं, यह आधा घण्टा हम अपनी मुख्य वस्तु आत्मा को दें, ते हमारे भले का सिलसिला चल सकता है।

2) प्रतिदिन छोटी मोटी यह सोचकर सेवा करें कि यह मेरे आत्मा की खुराक है। वह सेवा किसी बिमार की हो, किसी अनपढ़ को पढ़ाने की हो, किसी को हितकर बातचीत के द्वारा उसका और अपना भला करने की हो, अपने वा किसी और बुर्जुग की सेवा की हो, किसी दुखिया वा भूखे पशु की हो, लेकिन अपने आत्मा की खुराक समझकर की जाए, तो आत्मा में और ऐसी सेवाएं करने की भूख बढ़ती है, जिससे आत्मा का बल बढ़ता है और अगले महा व जन्म महोत्सव पर आने के लिए हमारे आत्मा उत्साह से भर सकते हैं।

3) जिस जिसके लिए सम्भव हो रात को सोते वक्त यदि इस पर विचार करें कि दिन भर में हमारा व्यवहार कैसा रहा, किसी का दिल दुखाया, ग़ल्त बोले, किसी का अपमान किया, यदि किया तो अगले दिन उस जन से क्षमादान मांग सकें, तो आत्मा शुद्धि की ओर बढ़ेगा।

बहुत बड़े-बड़े पहाड़ तो हम फतेह नहीं कर सकते, छोटी-छोटी बातें करके हम नये साल में विकास की ओर अग्रसर हो सकते हैं। काश! मैं ऐसा कर सकूं और आप ऐसा कर सकें।

सुरजीत बराड़

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 1
जनवरी 2008
वार्षिक मूल्य 50 रुपये
देवात्मा अंक

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 157 वां शुभ जन्म महोत्सव (2007)

परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी का 157 वां शुभ जन्म महोत्सव 22 दिसम्बर से 25 दिसम्बर 2007 तक शुभवती धर्मशाला सैक्टर 18 - डी चण्डीगढ़ में पिछले प्राय: 20 वर्षों की भांति इस साल भी पूरे चाव भाव और जोश से मनाया गया। इस शुभ अवसर की सफलता के लिए विशेष तैयारियाँ की गई। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने अपने साथियों को साथ लेकर बहुत सारे स्थानों का 2 बार दौरा किया। सेवकों और श्रद्धावानों को इस शुभ अवसर पर पहुँचने की प्रेरणा दी। बहुत सारे पत्र इस लक्ष्य के लिए लिखे गए। फोन पर भी सम्पर्क बनाकर रखा।'धर्म जीवन' और 'हित स्त्रोत' के विशेष अंक निकाले गए और महोत्सव का शुभ संवाद भी पहुँचाया गया। सैंकड़ों निमन्त्रण पत्र छपवाकर अधिकारी जनों को पोस्ट किए गए।

महोत्सव की सभाओं के प्रोग्राम के लिए पहले की तरह पण्डाल बनाया गया और तरपाल आदि से ढांपा गया। पंडाल को अन्दर से बहुत ही सुन्दरता से सफेद बर्फनुमा चादरों आदि से सजाया गया। बिजली के सुन्दर शैंण्डलीयर लटकाए गए। नये बहुत सारे देव बाणी के Mottos बहुत सुन्दर ढंग से बनवाए गए और सारे हाल में सजाए गए। गुरू महाराज का बड़े Size का नया फोटो सुन्दर ढंग से स्थापित किया गया। हाल को जगदीश जी, मोना जी बी. एड कालिज डेराबस्सी की लैक्चरर और लड़कियों ने बहुत सुन्दर ढंग से सजाया। केसूपुर के विद्यार्थियों ने भी बहुत सेवा की। सुन्दर फूलों से लदे हुए गेंदे और गुलदाऊदी के गमलों को भी स्टेज के साथ-साथ सजाया गया, जो बहुत सुन्दर शोभा देते रहे। सरोज जी कुक्कड़ हर वर्ष की तरह चुपचाप नाना अंगों में सहायकारी होती रही। बाहर आँगन में झण्डे लगाए गए और धर्मशाला की छत पर बड़ा विजय पताका सुशोभित किया गया। हाल को अन्दर से बिल्कुल नये ढंग से सजाया गया, जो बड़ी भव्य शोभा दे रहा था, और देखने वालों पर सुन्दर भाव डाल रहा था।

इस सारे संग्राम में जगदीश जी मुख्य तौर पर, और उनके साथ मधुसूदन जी, जलधर जी आदि ने भी कितने कामों में बहुत सहायता की। हमेशा की तरह बैंड का भी प्रबन्ध किया गया।

धर्मशाला के सारे कमरे साफ किए गए और कुछ सफेदी आदि भी जरूरत अनुसार करवाई गई। पानी के टैंकर का प्रबन्ध किया गया, जो हर समय पानी उपलब्ध रहता था।

लोकल हिन्दी और अंग्रेजी के कितने ही दैनिक अखबारों में महोत्सव के प्रोग्राम को हररोज छपवाने के लिए दिया जाता रहा। यात्रियों के स्नान आदि के लिए गर्म पानी का प्रबन्ध किया गया। यह सेवा श्रीमान सीताराम जी संगरूर और बूटा सिंह जी कल्याण खुशी - खुशी करते रहे। घण्टा बजाने की डियूटी श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा और ज्ञान चन्द जी गोनियाना करते रहे। पुस्तकों के स्टाल में भी वर्मा जी अपने साथियों समेत सेवाकारी होते रहे। दफ्तर का प्रबन्ध श्री जगदीश जी, उनके सपुत्र विनय जी ने किया। विनय जी हमेशा की तरह tempo द्वारा सब्जियों, रसद लाने और महोत्सव सम्बन्धी समान को ढोने की सेवा करते रहे।

गुरुदेव राज जी केसूपुर विशेष दिन सुबह के कीर्तन में अपनी पार्टी के साथ बहुत उत्साह वा श्रद्धा के साथ भजनों का गान करते रहे। बच्चों की सभा में श्रीमती सरोज जी, लैक्चरर मोनिका जी ने बच्चों की सभा conduct करवाई और ईनाम वितरित किए। 23 तारीख दोपहर के समय बी. एड. कालिज डेराबस्सी की छात्राओं ने बहुत सुन्दर भजनों को पेश किया और डाक्टर श्रीमती सतिन्द्र ढिल्लों प्रिंसीपल ने सभापति की जिम्मेवारी निभाई। श्रीमान दत्ता जी और जगदीश जी ने भी एक-एक भजन का गान किया। जो बहुत प्रभावशाली था।

कैंटीन और खाने का प्रबन्ध भी बहुत अच्छे ढंग से किया गया। सब हाजरीन पूरी तरह सन्तुष्ट रहे।

निम्नलिखित स्थानों से बहुत अच्छी तादाद में यात्रीगण पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, हिमाचल और गुजरात आदि से पहुंचे निम्नलिखित स्थानों से अर्थात दिल्ली, कल्याण, भुच्चो मण्डी, चण्डीगढ़, मोहाली, पंचकूला, दड़वा, बलटाना, रायपुरखुर्द, मेरठ, मोदीपुरम, देहरादुन, खतौली, मंडवाड़ी, लुधियाना, समराला, मोगा, केसुपूरा, मल्लेका, कुआंखेड़ा, बनी, डेराबस्सी, गजसिंह पुरा, पदमपुर, गंगानगर, रायपुर रानी, मुज्जफर नगर, गोनियाना मण्डी, संगरूर, यमुना नगर, थराजवाला, गिद्दड़बहा, गुजरात आदि स्थानों से यात्री आए।

बाहर से आने वाले जनों की गिनती 300 से भी अधिक होगी। विशेष पर दिन चण्डीगढ़ सैंटर के लगभग 350 विद्यार्थी आए और उन्होंने भजनों में भी भाग लिया और उस दिन शाम का लैक्चर भी बहुत ध्यान से सुना और कितने प्रश्नों के उत्तर आदि भी देते रहे।

महोत्सव की सभी सभाएं बहुत प्रभावशाली होती रही और उनमें अच्छा सुन्दर मण्डल बनता रहा। सभाओं का सक्षेंप विवरण इस प्रकार है।

22 – 12 – 2007

प्रवेश सभा :– 4 बजे शाम

सभापति :– श्रीमान बलबहादुर सिंह जी,

विषय :– यात्रियों का स्वागत

सब से पहले महोत्सव की सभाओं का शुभारम्भ जगदीश जी ने "हमारे पूजनीय सतगुरु, तुम हो धन्य, तुम हो धन्य" नामक भजन से किया। जिसका सब हाजरीन ने खूब दिल से साथ दिया। भजन के दौरान यात्रीगण आते गए और सभा के मध्य तक सिरसा, मल्लेका से भी बस द्वारा पार्टी पहुंच गई। जिसमें सौ के लगभग जन शामिल थे। इस प्रकार पण्डाल पहले दिन ही भर गया था।

उसके बाद छवि द्वारा परम पूजनीय भगवान

देवात्मा का फूलों के बहुत सुन्दर हार से अर्चन किया। देव स्त्रोत के गान वा व्याख्या के बाद "बड़े धन्यभाग्य उनके हैं, जो गुरु चरणों में आते हैं" नामक भजन का गान किया गया।

सभापति जी ने अपना ब्यान शुरु करते हुए बताया कि इस सभा का मकसद है (1) यहां आकर क्या मिलता है? (2) यात्रियों का स्वागत (3) लाभ उठाने के क्या नियम हैं?

संसार में महान काम करने वाले व्यक्तियों की महिमा गाई जाती है। कार्ल मार्कस ने कहा है कि सब प्रकार की बुराई का कारण सामाजिक विषमता है। सोशलिज़म इसका हल है। इस सिद्धान्त को प्रैक्टीकल रूप दिया लैनिन, स्टालिन और माऊसी तुंग ने इसके साथ राजनैतिक इन्कलाब पैदा हुआ।

इब्राहिम लिंकन वा थिऊडर पार्कर ने गुलामी की रस्म देखी और उसे दूर किया। हम सभी दुनियावी सामान इकट्ठे करने लग जाते हैं, इससे आगे हमारी सोच नहीं जाती।

एक भारतीय ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर इंडोनेशिया में गुलाम बनाया, उसकी वह भारी सज़ा भुगत रहे हैं। भाई का कातिल प्रवीन महाजन था। पिता - माता, भाई, भानजा और भतीजे को कत्ल करने वाली हरियाणा M.L.A. की पुत्री और दामाद था। पैसे के पीछे भागकर क्या परिणाम निकलते हैं। इसी कारण घर - घर में पापाचार है। घर - घर में हाहाकार है। परन्तु अन्धकार के कारण यह नज़र नहीं आता। यह दुनियावी वस्तुओं का नशा है।

मैं और मेरे साथी कालजिएट होस्टल में शराब पीकर शोर मचा रहे थे तो वार्डन साहिब आ गए। मुझे शराब के नशे में वह दिखाई नहीं दिए।

इस प्रकार हम पाप करते हैं, दुराचार करते हैं, कोई अपनी मां के प्रति बुरी तरह पेश आ रहा है, कोई पिता को गल्त बोल रहा है। कोई नशे, कोई मांसाहार, कोई चोरी ठगी, कोई कत्ल, खून, हमें न तो यह खराब वा बुरा दिखता है न हम अपने आपको बुरा देखते हैं। आखिर ऐसे दुर्व्यवहारों से क्या परिणाम निकलते हैं? सब से भयानक क्या नुकसान होता है? सबसे भयानक हानि क्या होती है? आत्मा रोगी होकर पतन, दुख और नाश को प्राप्त होते हैं।

हम अपनी हस्ती का नाश कर लेते हैं, अपनी जान को ही मुर्दा बना लेते हैं। मनुष्य का ही यह बड़ा अधिकार है कि वह अपने आत्मा के नाश के बारे में सोझी पाए। पशु तो पा नहीं सकते। हमें ईमानदारी और बेईमानी की समझ नहीं रही। पवित्रता और अपवित्रता की कोई समझ नहीं रही।

इस दर पर आकर नई जागृति मिलती है, जिससे नई होश पैदा होती है। यहां आकर ऐसी रोशनी मिलती है, जिसमें अपना आप नज़र आता है। अपने बुरे व्यवहार समझ आते हैं।

यहां एक बहन को अपनी बड़ी बहन के सम्बन्ध में अपना स्वार्थ दिखाई देता है और बहुत घृणित नज़र आता है। ऐसी ज्योति मिलती है तो बहन का बुरा व्यवहार बदल जाता है। स्वर्ग पैदा होता है। ऐसे वातावरण से शुभ आता है, भलाई आती है।

हमारा स्वार्थ हमें अन्धा बनाता है। हमारे नीच जीवन को दुख और नाश के फल लगते हैं। अन्धेरे हृदयों को पता ही नहीं लगता कि हमें किस प्रकार के भाई बनना है, किस तरह के पुत्र और किस प्रकार के पति बनना है।

श्रीमती सावित्री सिद्धू दिल्ली शिक्षा विभाग की उच्च अधिकारी को अपनी मां के साथ बुरा

सलूक नज़र नहीं आता था। पति के साथ बुरा व्यवहार दिखाई नहीं देता था। महोत्सव में शामिल होकर उसने अपने बुरे व्यवहारों को देखा और बहुत दुखी हुई फिर तो माता की भक्तिनी बन गई, और खूब सेवा की, मां ने सर्टीफिकेट दिया कि मेरी सावित्री मुझे मरने नहीं देती।

हमें यह सभाएं सुन सुनाकर ही नहीं चले जाना चाहिए। इस ज्योति को पाना है। हमारा व्यवहार हमारी आत्मा का ही अक्स और बाहरी प्रकाश होता है। वह केवल इस दर पर आकर ही रोशन होता है।

सभापति जी ने खड़े होकर हाजरीन का स्वागत किया, और मुबारक कहा। आने वालों का ध न्यवाद किया और कामना की कि सब आने वाले गुरू का प्रसाद लेकर जाएं। उच्च प्रेरणाएं लेकर जाएं, खाली हाथ न जाएं। सब का आना अधिक से अधिक सफल हो। भगवान की शरण पाने की तुलना में सब संसार का राज्य हेच है।

हम नारकीय और नीच सुख अनुरागी हैं। दुनियां में चोरी रिश्वत, बेईमानी, स्वार्थ का राज्य है। दुनियां बुरी है, हम बुरे हैं। हमें इस दर पर आकर अपनी बुराई नज़र आने लगती है। अपनी असल औकात का पता चलता है। हम सब अच्छे बने बैठे हैं। अपना मूल्य बहुत बढ़ा चढ़ाकर लगाए बैठे हैं। दूसरों का मूल्य कुछ भी नहीं डालते हैं। इस दर पर आकर अपनी बुराईयां और कमजोरियां नज़र आती हैं। उपकारी नज़र आते हैं, उपकार महसूस होते हैं। डाक्टर साहिब अपने ही उपकारी उस्ताद को 500 रूपये देकर कपटता से सूद लेते रहे। अपना स्वार्थी रूप नज़र नहीं आता था। अब गुरु महाराज को ध न्यवाद देते हैं।

देवात्मा का दर नई सामर्थ्य देता है। काम अनुरागी कुत्तों को पवित्र बनाते हैं। संसार में जहां एक बाप अपनी पुत्री से निकाह किए बैठा है और कहता है कि खुदा का यह हुक्म है। यहां गुरु के असर मिलते हैं तो अपनी होश मिलती है।

फिर इस ज्योति पाने के नियम बताए। पहला नियम हमारा समय पर आना और एकाकारी पहनकर आना। सच्ची, झूठी निन्दा बुराई न करना इससे भलाई का मार्ग बन्द हो जाता है। गुण चिन्तन वा उपकार स्मरण करो। अपने दोष देखो। प्रार्थनाशील होवो। दीन बनों, इन नियमों को पूरा करने से ज़रूर प्रभाव मिलेंगे। देवात्मा अपना दान देने के लिए व्याकुल हैं। सभापति जी के ब्यान के बाद सैक्रेटरी साहिब ने सब यात्रियों को welcome कहा और सन्मान दिया। अगले दिन का प्रोग्राम बताया। फिर 4 बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई। सभा बहुत प्रभावशाली थी। अधिकारियों को लाभ पहुंचाने वाली थी।

23.12.2007

ईतवार : सुबह 8.30 बजे

पहली सभा

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय : भगवान देवात्मा का परम अवश्यक और जीवन दायक सम्बन्ध

श्रीमान सुनील दत्ता जी ने पहला भजन "भगवान तुम्हारे चरणों में, जिसे आने का अधिकार मिला" गाया।

अर्चन, देव स्त्रोत का गान और व्याख्या की गई, फिर सभापति जी ने गहरे दिल के भावों से प्रार्थना की।

इसके बाद, "परम अवश्यक जीवन दायक, मेरे भगवन का सम्बन्ध" नामक भजन गाया गया।

सभापति जी ने अपना ब्यान शुरू करते हुए

बताया कि हमारे देश में उनकी महिमा बताई जाती है, जिन्होंने सम्बन्धों को त्याग किया हो, जंगलों में ठिकाना बना लिया हो। जैसे स्वामी रामतीर्थ जी ने प्रौफेसर की नौकरी छोड़कर, अपनी पत्नी और बच्चों को तिलांजली देकर पहाड़ों में पहुंचकर ईश्वर प्राप्ति का यत्न किया। इसी प्रकार और जनों ने भी ऐसा किया, उनकी महिमा गाई जाती है।

गुरु महाराज ने धर्म के स्वरूप को देखा और फरमाया कि धर्म सम्बन्धों में है, संसार को छोड़ने से नहीं मिलता। सम्बन्धी हमेशा हमारे साथ रहते हैं। सब सम्बन्धों का हम त्याग कर ही नहीं सकते। मनुष्य होना और सम्बन्धी होना एक ही बात है। जितना मनुष्य अधिक धर्मवान बनता है, उतना ही वह कर्त्तव्य बोधी होता जाता है। जितना कठोरता, स्वार्थ का जीवन सम्बन्धों में बन जाता है, वह बहुत लज्जाजनक और भयानक होता है, यह धर्म विहीन अवस्था है।

सम्बन्धों के बिना हम कुछ भी नहीं हैं। हमारा जन्म हमारी हस्ती सब सम्बन्धों की बदौलत है।

भौतिक ज़मीन, हवा, रोशनी, पौधे, पशुओं और मनुष्यों के बिना हम जी नहीं सकते, हम उन पर निर्भर हैं।

हवा में आक्सीजन हमारा परम आवश्यक सम्बन्धी है। पानी और खुराक भी हमारे परम आवश्यक सम्बन्धी हैं। यह सब जीवन देते हैं। यदि सूरज न होता तो आंखें न होती।

जो मनुष्य अपने आपको Self made देखते हैं, वह अन्धे हैं। जो अपने उपकारियों को और उनकी मेहरबानियों को देखते और अनुभव करते है, वह उन्हें प्यार, सेवा और दाता रूप में देखते हैं।

बड़े होकर, धन कमाकर उपकारी माता पिता और उनकी सेवाएं छुपने लगती हैं। एक अन्धा पुत्र, मां पर हाथ उठाता है, मारता पीटता और कहता है कि यह इसी योग्य है।

भगवान ने कहा कि घर के अन्दर रहकर ही मनुष्य धर्मवान बने। गण्डा सिंह जी को किस तरह प्रणाम करना सिखाया।

यदि मनुष्य की श्रद्धा और कृतज्ञता की आंखें खुल जाएं तो उसको दिखने लगता है कि माता पिता ने हमारे लिए क्या किया है?

जब मैं और मेरे भाई अन्धे होकर आपस में लड़ते थे, तो लोग कहते थे कि वह दिन दूर नहीं जब यह लोग अपने बाप को जंजीर के साथ बांध देंगें, उसकी एक नहीं सुनेंगे।

गुरु महाराज की हम पर कृपा हो गई। हमें हमारे उपकारी नज़र आने लग गए। हमारे व्यवहार बदल गए। किसी ने मेरे पिता जी से पूछा कि यह सरकारी मुलाज़िम है तुम्हें कुछ देता भी है? तो मेरे पिता जी ने कहा जितना कुछ यह देता है, काश दुनियां के सब बच्चे देने लग जाएं।

देवात्मा के सम्बन्ध से हमें धर्म की समझ आती है, नहीं तो नहीं आती। एक बड़े डाक्टर ने अपनी जुनियर लेडी डाक्टर जवान लड़की को छेड़ा। उसको लड़की ने कहा कि कुछ तो शर्म करो। डॉक्टर ने उसके ऊपर तेजाब फैंक दिया, उसका मुंह जल गया, अब वह जेल में है।

देवात्मा अपने प्रभावों से मनुष्य को गन्दगी में से निकालते हैं। मुझे जिस प्रकार देवात्मा ने गन्दगी में से निकाला है, मैं बेबस पुकारने लगता हूँ कि सत्गुरू आप धन्य हैं, आप धन्य हैं।

जो पत्नी को छोड़कर जंगलों में जाता है, वह पापी हैं, कर्त्तव्यहीन है। तपस्वी नहीं, धार्मिक नहीं।

धन, विद्या, कारोबार कितना भी हो, कारें, बंगले, नौकर हों, और कुछ भी हो, परन्तु यदि धर्म नहीं है, तो हम बारूद के ढेर पर बैठें हैं। पता नहीं कब विस्फोट हो जाए।

हम बच्चों के साथ सम्बन्ध बनाते हैं। उन्हें केवल पढ़ाना, लिखाना ही नहीं, धन जायदाद ही नहीं देनी, उनके भीतर धर्म भाव संचार करने हैं। सुअर वा ऊंट की तरह बढ़ना विकास नहीं है। पढ़े लिखे भी उच्च भावों के बिना पशु ही रह जाते हैं। होटल के एक बहरे के 'धन्यवाद' का शब्द न कहने वाले ग्राहक को कहा कि मैं वहशी की सेवा नहीं कर सकता। (I cannot serve the brute) हम सम्बन्धों में धन्यवाद न करके वहशी बनते हैं। नाशुकरा व्यक्ति धर्मवान नहीं हो सकता। संसार नाशुकरों से भरा हुआ है। नाशुकरे बेटों से दुनिया भरी पड़ी है।

एक बेटा मां को कहता है, "कुत्तीए, क्यों भौंकती हैं" वहां सुख आएगा, मेल आएगा? हरगिज़ नहीं। वहां भुचाल आएगा।

पाप के बम्ब देवात्मा की दुनिया में आकर disinfect हो जाते हैं, नकारा हो जाते हैं।

मदन मोहन लाल जी दिल्ली ने मां को कहा था, "रांड का पत्थर मारकर सिर फोड़ दूँगा" मां बाप अपने बच्चों के सम्बन्ध में अति विशाल हृदय रखते हैं। गुरु महाराज के दर पर आकर माता की वह सेवा की कि मां ने यह सर्टीफिकेट दिया कि, "बेटा, तुमने तो मेरे पेट पड़े का बदला चुका दिया।"

स्वार्थी के पास नीच भावों के बिना और कुछ नहीं होता। कोई ऐसा नहीं होगा जिसने गाय या भैंस का दूध नहीं पीया हो। किस को उसकी सेवा याद रहती है। एक सेवक ने अपनी उपकारी गाए की फोटो बनवाकर सजा रखी है।

लंगड़े बैल को पिता के मना करने पर भी घर से निकाल दिया। जब उसको ट्राली से उतारकर, उसका रस्सा उतारा तो बैल की आंखों से आंसुओं की धार बहने लगी। परन्तु छोड़ने वाले को कुछ नज़र नहीं आया। देवात्मा की शरण में आकर वही जन पशुओं की सेवा करने लग गए। सास माता की सेवा करते रहे, ताकि वह उन्हें दामाद नहीं बेटा महसूस कर सकें। कहां अपने बच्चों के साथ भी बन्दूकें तन गई थी।

मुलाजम देशवासियों का खून चूसते हैं। रिश्वत लेते हैं। जुल्ली राम जी ने भगवान के सम्पर्क से रिश्वत छोड़ दी। सारी उमर के लिए पाक हो गए। सेवा में लग गए।

भगवान का सम्बन्ध टीचरों को मां बना देता है। कनल जी की सुन्दर घटनाएं पेश की गई। टीचरों को फरिश्तों जैसा जीवन देवात्मा ने दिया। नोचने का जीवन खत्म कर दिया। सेवा का जीवन दिया। देवात्मा ऐसे पटवारी, कानूनगो, तहसीलदार बनाते हैं कि जो नोचने का काम नहीं करते, सेवा करते हैं। देवात्मा ने माल महकमें के भीतर स्वर्ग पैदा कर दिया। फरिश्ता तहसीलदार जी की घटना सुनाई।

पटवारी अपने बच्चों को दिवाली पर मिठाई के स्थान पर गुड़ लाकर देते हैं। यह अमृत है गुड़, रिश्वत का जहर नहीं। देवात्मा के सम्बन्ध से जीवन मिलता है। जहां स्वार्थ, नोचने, तड़पाने की बात है, वह चीते की तरह चीरने फाड़ने का काम करते हैं, वह जीवन नहीं।

खून देने का काम धर्म है, हमारे कैंप पर 160 जनों ने खून का दान दिया। गुरु महाराज नए एहसास पैदा करते हैं। देव प्रभाव उच्च घृणा पैदा

करते हैं। श्रीमान धर्म बल जी ने रिश्वत सम्बन्धी अपने पिता को कहा कि जैसे पैसे के लिए कोई बाप अपनी बेटी को चकले पर नहीं बिठा सकता, उसी प्रकार मैं रिश्वत नहीं ले सकता। बाप ने अपनी इस सोच के लिए महोत्सव पर बेटे के पैरों में पगड़ी रख कर क्षमा मांगी।

जहां सन्मान नहीं, श्रद्धा नहीं, शुक्रगुजारी नहीं, वहां धर्म नहीं। जो जन उपकार पाकर प्रति उपकार नहीं करता, वह गुरु महाराज के निकट खुदगर्ज़, कमीना वा पापी कहलाता है।

श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी से खाना खाने के लिए मैंने पूछा तो उन्होंने कहा, भाई खा लेंगे, यदि तुम पैसे ले लोगे।

मैं यदि इस दर पर न आता, तो बर्बाद हो जाता। स्त्री जाति के सम्बन्ध मुझे पवित्र बना दिया। मैं सन्तुष्ट हूँ। यह कभी सम्भव नहीं था, मैं तड़प-तड़प कर मर जाता। माता पिता के सम्बन्ध में नया जीवन मिला है। सेवाकारी बना दिया। खुदगर्ज को विद्यार्थियों के लिए मां का रूप दे दिया। दरिंदगी बन्द हो गई। बच्चे प्यार से मेरी टांगों से लिपट जाते थे। इसलिए देवात्मा का सम्बन्ध परम आवश्यक है। उनके सम्बन्ध के बिना हमारी खैर नहीं। सभापति जी के ब्यान के बाद गुरु महाराज के रूप को उज्ज्वल रूप में प्रस्तुत करते हुए सैक्रेटरी साहिब ने भी सम्बन्धों में अन्दर स्वर्ग के दृश्य पेश किए।

यह सभा भी बहुत प्रभावशाली सिद्ध हुई। हाजरीन बहुत धन्य-धन्य हुए और गुरू महाराज के आगे झुकते रहे। चार बार जय ध्वनि के साथ यह सभा समाप्त हुई।

2 बजे दोपहर : भजनों की सभा

सभापति – डाक्टर सतिन्द्र ढिल्लों प्रिंसीपल

डेराबस्सी बी. एड. कालिज की विद्यार्थियों ने बहुत सुन्दर भजनों का प्रोग्राम पेश किया, जो हाजरीन ने बहुत पसन्द किया एक-एक भजन जगदीश जी और सुनील दत्ता साहिब ने भी गाया, जो बहुत भावपूर्ण थे।

भजनों के इस प्रोग्राम ने महोत्सव की शोभा को बढ़ाया।

शाम 4 बजे पब्लिक लैक्चर :-

23.12.2007 – शाम 4.00 बजे पब्लिक लैक्चर

वक्ता – श्रीमती सुरजीत बराड़ प्रिंसीपल

विषय – जीने की कला और देव धर्म

सभापति – डाक्टर विनोद खेड़ा

डाक्टर विनोद खेड़ा ने वक्ता का संक्षिप्त परिचय कराया और वक्ता योग्यताओं और उपलब्धियों की ओर ईशारा किया। फिर एक भजन के बाद श्रीमती सुरजीत बराड़ ने अपना ब्यान आरम्भ किया कि कला का अर्थ है किसी भी काम को करना और निपुणता से करना जैसे-भोजन बनाना, परोसना भी एक कला है, कपड़े धोना, सम्भालना, घर साफ रखना, सफाई तरतीब से रखना यह सब कला है, परन्तु इसमें निपुणता सबकी भिन्न-भिन्न है। इन कलाओं में निपुणता प्राप्त करके भी यह आवश्यक नहीं कि हमें जीने की कला आ जाए।

एक रूसी लेखक मैक्सिम गोंकी ने लिखा है "मनुष्य ने मछली की तरह पानी में बैठकर तैरना तो सीख लिया, चिड़ियों की तरह हवा में उड़ान भरना भी सीख चुका है, परन्तु धरती पर मर्यादा से जीना सीखना अभी बाकी है।"

यह कहना शत प्रतिशत सत्य है। धन,

वैभव, पद, प्रभुत्व रखकर भी मनुष्य ने जीना नहीं सीखा। सिंधिया परिवार, नेपाल का शाही परिवार, अम्बानी परिवार इसके उदाहरण है। अथाह दौलत रखकी भी परिवार के कलह क्लेश का शिकार है। नेपाल के राजा का तो सारा परिवार अपनों के हाथों ही कत्ल हो गया।

इससे हम समझतें हैं कि मनुष्य ने जीना अपने सम्बन्धों में सीखना है। भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशुजगत और मनुष्य जगत, यह हमारे जीवन के आधार हैं। इनके बिना हमारा जीना सम्भव ही नहीं है।

शोक! कि धर्मो ने सम्बन्धों को त्यागने की शिक्षा दी, जिसके कारण लाखों करोड़ों निकम्में साधुओं की टोली खड़ी हो गई। कर्त्तव्य और ज़िम्मेवारी से भागकर जंगलों में जाकर ईश्वर से योग करने को धर्म बताया है।

धर्मों में पशुओं को हलाल व झटका कहकर मारने को धर्म कहा है, जाति-पाति का भेद भाव बताकर सदा के लिए एक समस्या खड़ी कर दी। स्त्रियों को तिरस्कृत किया गया है। मिथ्याओं में फंसाकर मानवता को गुमराह किया है। जाप, पाठ, तीर्थ यात्रा, स्नान आदि करने से पाप धुल जाते हैं, यह कहकर पाप करने का लाईसेंस दे दिया है। ग्रहों के चक्करों में डाला हुआ है। अज्ञानता और जहालत फैलाकर विज्ञान की रोशनी में जीने के अयोग्य बना दिया है।

कवि दिवाकर राही ने लिखा है :-

"लाख शेखो ब्रह्मण, कुछ भी कहें,
आज मज़हब जाहल की जागीर है"

धर्मों ने जहालत फैलाई है।

धार्मिक जनून पैदा करके अपने से भिन्न धर्म मत रखने वालों को शत्रु समझा जाता है। इस धार्मिक जनून ने आतंकवादी पैदा कर दिए, तो मानवता के साथ सुमेल से रहना इन्सान कैसे सीखेगा?

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मनुष्य की आपसी सम्बन्धों में दुर्दशा देखी और पाप और मिथ्या से बचाने के लिए वह पुकार उठे।

"मुझसे हो सकती नहीं, सुख शादमानी से बसर,
मुबतलाए पाप होवें, हम वतन मेरे अगर"

उन्होंने मनुष्य प्रकृति का विज्ञान मूलक अध्ययन किया कि मनुष्य को उसकी नीच भाव शक्तियां चलाती हैं, जिससे वह जहन्नुम बरपा होता है। स्वार्थ, घमंड, नीच घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, मान बड़ाई, जब तक यह भाव है मनुष्य सुख से ना जी सकता है और ना ही जीने दे सकता है। इन भावों को नष्ट करके श्रद्धा, सन्मान, कृतज्ञता, अभाव निवारण जैसे भाव पैदा करके उन्होंने मनुष्यों की काया कल्प कर दी। सही मायनों में जीना सिखाया। अपने जीवन का चारों जगतों के सम्बन्ध में आदर्श प्रस्तुत किया, (उसके कुछ उदाहरण दिए गए।) उसके बाद उनके देव प्रभावों से आए उच्च परिवर्तनों का ज़िकर किया कि देवात्मा ने कैसे जहन्नुमी जीवनों को स्वर्गीय जीवन जीने के योग्य बनाए। अन्त में देवात्मा की देव वाणी "मैं इस पृथ्वी पर स्वर्ग चाहता हूँ....." पढ़कर सुनाई और अपना व्याख्यान बन्द किया।

सभापति जी ने लैक्चर की शानदार कामयाबी के लिए श्रीमती बराड़ का धन्यवाद किया और मुबारकबाद दी। हाज़रीन का भी जो 400 के करीब उपस्थित थे, धन्यवाद किया, जिन्होंने एक सुर होकर और टिकटिकी बांधकर सारे लैक्चर को सुना।

इसके पश्चात सैक्रटरी मिशन ने भी उच्च

जीवनों के देव धर्म के इतिहास से कुछ वृतांत बताए, फिर अगले विशेष दिन के सारे प्रोग्राम की हाजरीन को सूचना दी। जय ध्वनि के साथ यह सुन्दर सैंशन सम्पन्न हुआ।

24.12.2007

महोत्सव को विशेष दिन

सुबह 6.30 बजे :- यात्रीगण फूल मालाएं लेकर धर्मशाला के आंगन में इकट्ठे हुए और उन्होंने गुरु महाराज की महिमा के गीत गाने शुरू किए। एक तरफ बैंड बाजा तैयार था। केसूपुरा की पार्टी ने खूब जोश के साथ भजनों के गान में भाग लिया। बहुत ही प्रभाव दायक मण्डल बना।

सूरज की पहली किरण के साथ घण्टा बजा और जय ध्वनि के नारे बुलन्द हुऐ, बैंड बजने लगा और साथ ही "प्रगटे देवगुरु भगवान" का गीत गूंजने लगा।

फिर स्टेज पर खड़े हो सैक्रटरी देव धर्म मिशन श्रीमान बलदेव सिंह जी ने यात्रीगण को इस मुबारक दिन की बहुत-बहुत मुबारक बाद दी। पूजनीय भगवान का चारों जगतों का हितकारी रूप पेश किया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के आध्यात्मिक उपकारों को बताया। उनके जन्म स्थान वा माता पिता की महानता का वर्णन किया और ऐसी कामना की कि उनका ज्योति और तेज चारों ओर फैले।

उसके बाद बैंड की धुन बजने लगी, और कुछ जन उत्साह पूर्वक उस धुन पर नाचने लगे। सेवकों ने कतार में जाकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा की छवि के आगे फूल मालाएं रखी और प्रणाम का साधन किया।

सुबह 8.30 बजे :- महा सभा

सभापति : श्रीमान बलदेव सिंह जी

विषय : देवात्मा का अनोखा जीवन व्रत, उसके लिए उनके आद्वितीय त्याग।

भजन : आद्वितीय जीवन व्रत धारी, आद्वितीय महिमा है तुम्हारी" श्रीमान जी ने पहले दिल के गहरे भावों से पूजनीय भगवान के चरणों में सहाय प्रार्थना की।

फिर सभापति जी ने बताया कि सभा का विषय गंभीर है, जो विशेष ध्यान की मांग करता है। पहले इस बात को समझने की आवश्यकता है कि नेचर में परिवर्तन जारी है, जो विकास और विनाश के रूप में समझने की आवश्यकता है। विकास क्रम की समझ के बिना देवात्मा की समझ नहीं आ सकती। रोशनी के स्त्रोतों को विकास हुआ है। सफर की दुनियां का विकास हुआ है, बर्तनों का विकास, पौधों पशुओं का विकास हुआ है। मनुष्यों के दिलों वा दिमागों का विकास हुआ है।

हम विकास क्रम की बरकतें भोग रहे हैं। विकास क्रम में सूर्य पैदा होते हैं। धरती बन गई। पशु पौधे बन गए और पशुओं की एक खास नसल से मनुष्य का विकास हुआ, उसी विकास के नियम ने बहुत से महापुरूषों को पैदा किया, उसी विकास के नियम ने एक और करिश्मा पैदा किया और मनुष्य मात्र में से देवात्मा का विकास हुआ है। देवात्मा सत्य और शुभ के अनुराग, पाप और मिथ्या के नाश करने के मूर्ति रूप हैं।

मनुष्य की परिचालक शक्तियां नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं हैं, इसलिए मनुष्य का मोह, पाप और मिथ्या में फंसना आवश्यक है। इसी मोह, पाप वा मिथ्या को मिटाना धर्म का लक्ष्य है। सत्य, शुभ को लाना धर्म का लक्ष्य है। सत्य शुभ को लाकर, पाप मिथ्या को मिटाने का लक्ष्य बनाकर देवात्मा ने जग का महा उपकार किया है। इसी

लक्ष्य को पूरा करने के लिए उन्होंने अपना जीवन व्रत ग्रहण किया। ऐसा जीवन व्रत ग्रहण करके ही उन्होंने हमें पाप मिथ्या से बचाया है, नहीं तो आज हम कहां होते, यह हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

देवात्मा को जीवन व्रत ग्रहण करने में मिस मेरी कारपैंटर के त्याग से प्रेरणा मिली, कि समुन्द्र पार से आकर हमारे देश की भलाई के लिए काम किया। महात्मा बुद्ध के त्याग से प्रेरणा मिली। मेजर टक्कर बूथ और उनकी मेम (मुक्ति फौज वाले) के त्याग से प्रेरणा मिली। परम पूजनीय भगवान देवात्मा को नेचर के विकास के नियम पर पूर्ण भरोसा हो गया कि जो भलाई के मिशन में लगते हैं, उनकी नेचर में अवश्य सहायता होती।

देवात्मा के इस लक्ष्य ने बड़े पापीयों को बदला। डाक्टर चन्दूलाल जी भटिंडा जो विरोधी थे, उनको बदलकर सेवा में लगा दिया।

परन्तु इस मिशन को पूरा करने के लिए देवात्मा को घोर दुख, उत्पीड़न वा कष्टों में से गुजरना पड़ा, रातों की नीदें उड़ गई। बिमारियों ने घेर लिया। मुकदमों में फंसाया गया। लगातार 10 वर्ष तक मुकदमों से महा कष्ट पाया। कोई वकील केस लड़ने को तैय्यार नहीं होता था। चन्दा सिंह वकील ने पूरा ज़ोर लगाया कि देवात्मा को जेल भेजना है और ऐसे हालात पैदा किए ताकि उनकी जमानत न हो सके, परन्तु नेचर का विकास का नियम देवात्मा का साथी था। ऐसे मुशकिल समय में सरदार जमीयत सिंह जी ने उसी समय उनकी जमानत करवाई, उनका यह उपकार देवात्मा सारी उमर नहीं भूले। बेहोशी की हालत जब थोड़ा सा भी होश आया तो पूजनीय भगवान ने श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को फरमाया कि हो सकता है वह अब न जी सकें, परन्तु वह उनके यह भाव सरदार जमीयत सिंह जी तक अवश्य पहुँचा दें कि उनकी उस सेवा के लिए पूजनीय भगवान उनके आभारी हैं। एक ओर नेचर के विकास के नियम ने देवात्मा की जो अथाह सहायता की उसका सुन्दर दृश्य है और दूसरी ओर देवात्मा की कृतज्ञता का आलम है कि बेहोशी में भी वह अपने उपकार कर्ता को नहीं भूले।

चन्दा सिंह वकील ने उन पर मुकदमें दायर किए तरह-तरह उन्हें सताया, झूठे अरोप लगाए, उसके डर से कोई वकील पूजनीय भगवान के साथ नहीं होता था। पैसे लेकर भी हाजिर नहीं होते थे, परन्तु नेचर के विकास का करिश्मा देखें, एक बार कचहरी में सरदार गुरुमुख सिंह जी के कन्धे पर हाथ रखकर जब देवात्मा ने यह फरमाया, "किसी बेगुनाह को सताने की भी कोई हद होती है।" तो सरदार गुरुमुख सिंह जी हिल गए और सदा के लिए देवात्मा के कायल हो गए और उनके चरणों में झुक गए।

आखिर चन्दा सिंह की हार हुई। वह स्वयं जेल गए। उस समय देवात्मा के साथ 4 वकील खड़े थे परन्तु चन्दा सिंह के साथ एक भी वकील नहीं था। चन्दा सिंह की कोठी नीलाम हो गई। वह ख्वार होकर इस दुनियां से गया।

दो आर्या समाजी ऐडीटरों ने देवात्मा का घोर अपमान किया। अपने अखबारों में झूठे इल्जाम छापे। देवात्मा ने मान हानि का दावा किया और पूजनीय भगवान वह केस जीते। उन ऐडीटरों को उन इल्जामों को झूठा मानकर कई अखबारों में छापना पड़ा और क्षमा माँगी।

धर्मपाल (अब्दुल गफूर) ने पूजनीय भगवान के दरबार में आकर गजब की तबदीली हासिल की थी। उनको बचाने के लिए डॉ. हरनाम सिंह ने उनकी सेवा में अपने जीवन का बलिदान दे दिया।

परन्तु वही धर्म पाल आर्य समाज वालों से मिलकर देवात्मा के मिशन के विराधी बन गए। उन्होंने खुद स्वीकार किया था कि उन अकेलों ने 72000 ट्रैक्ट वा किताबें देवात्मा के विरूद्ध पब्लिक में बांटी।

देव रत्न ने 24 वर्ष देवात्मा के दर पर बेबहा उपकार पाए। उनके कर्मचारी वा प्रचारक रहे, "सुरक्षित हूँ मैं हे भगवान तुम्हारी शरण में आकर, नहीं रक्षा कहीं मेरी, तुमसे परे जाकर।"

परन्तु उनकी एक पाक प्रतिज्ञा टूटने पर जब उन्हें चेतावनी दी गई, फिर भी वह नहीं सम्भले, तो उन्हें समाज से बाहर निकालना पड़ा, उन्होंने भी विरोधता के झण्डे गाड़ दिए। बेइन्तहा दुख पहुंचाया, मुकदमें किए। परन्तु जब देवात्मा ने उसके जबाब में यह छापा "देव रत्न का सियाह कारनामा" तो वह पंजाब छोड़कर भाग गए। उनसे बड़ा कृतघ्न व्यक्ति शायद ही पैदा हो। परन्तु देवात्मा उनके हमलों से भी सुरक्षित बाहर निकले, यह विकास के नियम की एक और फतह थी।

श्री मनसा राम जी को श्रेणी में उन्नति नहीं मिली, वह भी देव रत्न से जाकर मिल गए, परन्तु आखिर उन्हें अपनी गल्ती का एहसास हुआ और उन्होंने क्षमा मांगी। लक्षमण दास, गिरधर राय ने विरोधता की। देवात्मा के अपने बच्चे अपने सुखों पर चोट लगने से विरोधियों के साथ मिल गए। इन सब विरोधी तुफानों से देवात्मा ने जो असहाय दु:ख सहे हैं, जिस तड़पन वा जाकंदनी में से निकले हैं, एक ओर यह दर्दनाक कथा है, दूसरी ओर इन सब उनकी फतह की कथा नेचर के विकास क्रम का अजब करिश्मा है। यह सब दु:ख, उत्पीड़न उन्होंने हम लोगों की भलाई के लिए सहे हैं। हम धन्य-धन्य है जो हमें उनकी शरण में आने का और अपने जीवनों को बचाने का सौभाग्य मिला है।

जन धन की अपील

इस सभा के बाद जन और धन की अपील की गई। इसमें निम्नलिखित जनों ने सत्संग में आने और अपना समय देने का वायदा किया।

1) सुभाष चन्द्र जी :- मैं सत्संग से जुड़ूंगा, 'धर्म जीवन' जारी करवाया।
2) हरदयाल जी :- नजायज कमाई नहीं करूंगा।
3) विनय कुक्कड़ :- मैं सत्संग किया करूंगा, कल्याण सत्संग में शामिल हूंगा।
4) रजिन्द्र जी :- मैं सत्संग में आया करूंगा, कल्याण सत्संग पर पहुंचूगा।
5) श्रीमान सीताराम जी :- मैं भी कल्याण सत्संग पर परिवारिक जनों को लेकर पहुंचूगा।
6) श्रीमान पंडित तेज राम जी :- मैं एक महीना सत्संग करूंगा। हाजरीन की तरफ से धन, देने का भी अच्छा response मिला। सवा लाख के करीब दान प्राप्त हुआ।

बच्चों की सभा - दोपहर 1.30 बजे

भजन - श्रीमान दत्ता जी ने गाया "महिमा वर्णन में न आए" इस सभा का संचालन श्रीमती सरोज जी और उनकी सुपुत्री मोना जी लैक्चरर ने बहुत सुन्दर ढंग से किया। 12 वर्ष से कम उमर के बच्चों ने इस प्रोग्राम में भाग लिया। उन सब को ईनाम दिए गए।

बच्चों के बाद डॉ. खेड़ा जी की अकैडमी के बच्चों ने बहुत सुन्दर भजनों का प्रोग्राम दिया, इससे इस सभा की शोभा और भी बढ़ गई। बच्चों को अकैडमी की ओर से सुन्दर कीमती शालें भेंट की गई, जो श्रीमान बलदेव सिंह जी द्वारा दिलवाई गई।

इस सभा में 350 के लगभग बच्चे कोचिंग सेंटर से आए और सारे प्रोग्राम में शामिल हुए। चार बार जय ध्वनि करके इस शानदार प्रोग्राम की समाप्ति हुई।

24 – 12 – 2007

4 बजे शाम – पब्लिक लैक्चर

वक्ता – डाक्टर श्री विनोद खेड़ा

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

पहले भजन का गान हुआ, फिर सभापति जी ने डाक्टर विनोद जी खेड़ा का संक्षेप परिचय करवाया। उनकी उपलब्धियों, देव समाज के प्रति उनके लगाव वा सेवाओं का वर्णन किया। उसके बाद डाक्टर विनोद खेडा ने अपना ब्यान आरम्भ किया।

इस लेक्चर का विषय **''मनुष्य जीवन की खाईयां और उससे उद्धार''** रहा। लेक्चर के वक्ता श्रीमान डाक्टर विनोद खेड़ा ने मनुष्यों के जीवनों में आ रहे तूफानों, दुःखों और मुसीबतों से उत्पन्न खाईयों और खड्डों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया। उन्होंने उनसे बचने के उपाय भी सुझाए। इस लेक्चर को सुनने के लिए सैक्टर 18-डी, धर्मशाला का हाल श्रोताओं से खचाखच भरा हुआ था।

डाक्टर खेड़ा ने सैकड़ों श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए सबसे पहले मनुष्य जीवन के अर्थ, धर्म और ईश्वर विषयों पर चर्चा की जिसमें उन्होंने आज के युग के सबसे बड़े वैज्ञानिक Albert Einstein के विचारों से उपस्थित जनों को अवगत कराया। जिन्होंने यह कहा था '' मानवता के धर्म के शुरू के दिनों में इन्सान ने अपनी कल्पना शक्ति की दौड़ में देवी-देवता व ईश्वर अपने स्वयं के प्रतिबिम्ब में घड़े।''

उन्होने बहुत रोचक कहानियों के माध्यम से यह समझाने की कोशिश की कि मनुष्य केवल सुखों का गुलाम होने के कारण ही सभी अनुचित दुःख झेलता है और यही मनुष्य जीवन की खतरनाक खाईयां हैं। मनुष्य का प्रत्येक नीच सुख उसके लिए खाई खोदने का काम करता है। जैसे अमरीका के राष्ट्रपति कामवासना का शिकार होने के कारण कितनी बड़ी मुसीबत में फंस गए थे। दिन-रात इसी कामवासना के शिकार होने से जो महा दर्दनाक घटनाएं होती रहती हैं उनसे प्रति दिन समाचार पत्र भरे रहते हैं। नशों की गुलामी, आलस्य की गुलामी, स्वाद वासना की गुलामी मनुष्य को नई से नई खाईयों में पहुंचाने का काम करती है जिसके फलस्वरूप मानवता बहुत दुखी है। विश्वविख्यात साहित्यकार एवं राजनायिक बर्नाडशा के मुताबिक मनुष्य की कब्रें रसोईयों में खोदी जाती हैं। अर्थात गलत और आवश्यकता से अधिक खाकर इन्सान अपनी पूरी आयु भी सुख से भोगने के अयोग्य हो जाता है। इसी प्रकार सन्तान संबंधी खाईयां इन्सान को अपना प्राकृतिक जीवन जीने नहीं देतीं। कितने ही लोग अपनी सन्तान की किसी दुर्घटना से मौत होने पर खुद भी गम से घुल घुल कर अपनी मौत जल्दी बुला लेते हैं। इसी प्रकार धन का बंधन इन्सान को बहुत मुसीबतों की घाटियों में उतारता है। डाक्टर खेड़ा ने अनेक उदाहरण देकर अपनी उपरोक्त बातों को बहुत अच्छे ढंग से उपस्थित जनों पर प्रकट किया।

मानव जगत की यह दुर्दशा कैसे दूर हो? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए डाक्टर खेड़ा ने बताया कि हमारी भारत भूमि ने 1850 ई. में एक ऐसे आविर्भाव को प्रकट किया जिनके अन्दर मनुष्य की तरह किसी भी सुख की गुलामी लेशमात्र भी नहीं आई। वह सब प्रकार के नीच सुखों की गुलामी से उपर होने और हर प्रकार की सच्चाई और भलाई के पूर्ण आशिक होने के कारण मनुष्य के हर अनुचित दुःख को दूर करने की सामर्थ्य लेकर पैदा हुए। उनके प्रभावों को प्राप्त करके हजारों मनुष्यों ने अपने जीवन को खतरनाक खाईयों से उभार कर अपना और दूसरे लोगों, पौधों और पशुओं का शानदार भला किया है, मनुष्य के आपस के

सम्बंधों में उच्च मेल स्थापित किया है और इसी पृथ्वी में मनुष्य के जीवन में एक ऐसा स्वर्ग पैदा किया है जिसे मानवता ने पहले कभी नहीं देखा था।

डाक्टर खेड़ा के लेक्चर के पूर्व चंडीगढ़ कोचिंग सेंटर के विद्यार्थियों ने भजन प्रस्तुत कर परम पूजनीय भगवान के प्रति अपनी भावनाओं को अति सुन्दर ढ़ंग से व्यक्त किया। इस के बाद इन्हीं विद्यार्थियों ने कव्वाली "मुझे भी शफा दो शफा देने वाले" बहुत उत्साह के साथ प्रस्तुत की जिसने लोगों के दिलों को छू लिया।

श्रीमान् बलबहादुर जी ने इस लेक्चर की अध्यक्षता की और वक्ता की विशेष योग्यता की पूरे दिल से सराहना की।

महोत्सव का आखरी दिन

25.12.2007

पहली सभा – 8 बजे सुबह

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी,

विषय – नये सेवक सेवकों का ग्रहण

सब से पहले एक महिमा सम्बन्धी भजन का गान किया गया। फिर गुरु महाराज जी का फोटो द्वारा अर्चण, देव स्त्रोत का गान वा व्याख्या की गई।

सेवक वा सेविका बनने वालों को आगे बिठाया गया। उनका एक-एक करके परिचय कराया गया। उस समय बड़ा ही सुन्दर दृश्य पैदा हुआ। जब दो वर्ष पहले एक घोर शराबी, बीड़ी सिगरेट बाज, जो सड़कों पर अकसर मदहोश, मुर्दों की तरह पड़े रहते थे उनका परिचय कराया गया, उनकी बीवी बी. ए. तक पढ़ी लिखी है, जो बेचारी सब्जी बेचकर अपने बच्चों का पेट पालती थी, बड़े कृपा-पात्र हालात थे। लोग बीवी को सलाह देते थे कि वह ऐसे निकम्में को छोड़कर चली जाए। ऐसे जन का परिवर्तन सुनाया गया गुरु महाराज की आद्वितीय शक्ति सामने लोग झुकने के लिए मजबूर हो रहे थे। उसकी पत्नी ज़ोर देकर सेवक बनी।

फिर शुभ कामना सम्बन्धी भजन "सेवक बनने का इन सबको महा अधिकार मिल जावे" गाया गया।

फिर देव धर्म के विजय पताका के नीचे खड़े करके सेवकी की प्रतिज्ञाएं करवाई गई।

1. श्रीमान दीप चन्द जी मेरठ-यू. पी.
2. श्रीमान रजिन्द्र सिंह जी देहरादून
3. श्रीमती पुष्पा जी सक्सैना बी. ए.
4. श्रीमती सुरजीत कौर जी, पत्नी श्रीमान हरदेव सिंह जी केसूपुरा
5. श्रीमती कर्मजीत कौर जी पत्नी श्रीमान बलदेव सिंह जी, मलेका (सिरसा)
6. श्रीमती संदीप कौर जी पत्नी श्रीमान कुलदीप सिंह जी, गोनियाना मण्डी।
7. श्रीमती प्रवीन लता जी पत्नी श्रीमान सुखदेव सिंह जी गोनियाना मण्डी प्रतिज्ञाओं के बाद हाजरीन ने सब को हार पहनाकर सम्मानित किया। और कई जनों ने इस खुशी में दान दिया। बहुत ही सुन्दर दृश्य था।

भाव प्रकाश

1) **श्री भूषण जी भंडारी, ऐडवोकेट, मोहाली :-**

मैं बहुत शर्मसार हूँ कि मैं महोत्सव में लेट आया हूँ। बहुत कुछ मिस किया है। बहुत हानि हुई है। बहुत ही घाटा महसूस हो रहा है। यहां आकर माता पिता और भाई बहनों के उपकार नज़र आए हैं। अपनी पत्नी और पुत्री मेनका के गुण नजर आए हैं। मैंने बहुत ही गल्तियाँ की है। मुझे अपने सुधार करने की आवश्यकता है। मैं सुधार करूंगा। मैं योग सम्बन्धी विषयों को नहीं भूलता, महोत्सव की तारीख कैसे भूल जाता हूँ। आगे से मैं सारे महोत्सव में हाजिर हूंगा। भगवान देवात्मा की कृपा के कारण मोटे-मोटे पापों से बचा हुआ हूँ। शराब, सिगरेट आदि पूर्ण तौर पर छोड़ा हुआ हूं। मैं बहुत ही आलसी हूँ। अखबारों का चन्दा भी जमा नहीं करवाता। (उन्होंने वही जमा करवा दिया) अपनी बहुत सी कमज़ोरियां नजर आई हैं। (आपका ब्यान पश्चाताप से भरा हुआ था, इसलिए अच्छे असर पड़ रहे थे।)

2) **श्रीमान मधु सूदन जी :-** मैं चोर हूँ। (फूट-फूट कर रो रहे थे) मैं पत्थर की चोट खाकर ही महसूस करने वाला हूँ। फूल की चोट मुझे अनुभव नहीं होती। खेड़ा साहिब के लैक्चर से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। चार पत्नियों के उदाहरण सुनकर लाभ हुआ है। अपने आपको चौथी पत्नी के रूप में खड़ा अनुभव करता हूँ। पांच मेंडको की कहानी सुनकर अपना आप भी खाली महसूस हुआ है। (बहुत रो-रो कर) मैंने जिस बैल से बहुत सेवा पाई थी, उसको मारता पीटता रहा हूँ। मैं भी मां का पत्थर मारकर सिर फोड़ने वाला होता यदि यहां ना आता। आगे से अधिक सेवा करने की कोशिश करूंगा। अपनी महिमा नहीं देखूंगा। मैं भला इन्सान बनूँगा। बेईमान नहीं बनूँगा। मैं समय न देकर कुटिलता करता हूँ। भगवान के प्रति कुटिलपना नज़र आया है। अपनी तरफ ध्यान ले जाकर शर्मसार होता रहा हूँ। (आपका ब्यान बहुत ही हृदय स्पर्शीय था, दिलों का हिला रहा था।)

श्री ओम प्रकाश जी आदर्श :- (वह 21 दिसम्बर से पहुँच कर लाभ उठाते रहे हैं) मैं अपने ईलाज के लिए आया हूँ। कोई एहसास नहीं किया। यहाँ आकर सेहत, गमों और भावों के सम्बन्ध में राहत पाई है। बहुत कुछ पाया है। बहुत प्रभावित हुआ हूँ। धन्य-धन्य हुआ हूँ। बड़ी उमर में भी धर्म सम्बन्धियों को लगे देखकर प्रभावित हुआ हूँ। गुरु मिशन के काम को होता देख बहुत खुशी होती है। अन्दर वलवले पैदा होते रहे हैं। खेड़ा साहिब के लैक्चर से बहुत लाभ हुआ है। उन्होंने अलग अन्दाज में गुरु महाराज की शिक्षा को पेश किया। 500 से अधिक हाजरीन 3 घण्टे बहुत ध्यान से सुनते रहे। महोत्सव सम्बन्धी एक गीत भी उन्होंने सुनाया।

4) **श्रीमान सुभाष चन्द्र जी पंचकूला :-** महोत्सव की सब सभाओं में परिवार सहित शामिल हुआ हूँ। विशेष लाभ हुआ। माता पिता का उपकारी रूप महसूस होता रहा है। उन्होंने सेवक बनाकर गुरू महाराज से हाथ जोड़कर बहुत बड़ा उपकार किया

है। बेटा और बहू बहुत सेवा करते हैं। गुरू महाराज के पैदा किए परलोक वासी कर्मचारियों की बहुत कृपा रही है। उनकी याद ही उत्साह वा उच्छवास से भर देती है।

5) **श्रीमान गुरूदेव राज जी केसूपुरा :-** गुरू महाराज की वा धर्म सम्बन्धियों की बहुत कृपा है कि हम एक गांव से 100 के करीब जन पहुंचे हैं। हमारे गांव में पिछले महीनों में सत्संग रखें गए। पिछले सत्संग से विशेष लाभ हुआ है। मां के कुछ कहने पर मैंने उन्हें हररोज का प्रणाम करना छोड़ दिया। फिर सभा से बहुत लाभ हुआ। गुरु के प्रभाव मिले और फिर माता जी को भरी सभा में प्रणाम करने के लिए मजबूर हो गया। अब हररोज प्रणाम करता हूँ। माता पिता, दादा वा दादी की कृपा से मोटे पापों से बचा हुआ हूँ। खेड़ा साहिब के ब्यान से अपने जीवन की खाईयों का पता लगा है। आलस्य बहुत घृणित महसूस हुआ है। इन खाईयों से निकलूंगा। मैं संग्राम करूंगा। साधन किया करूंगा। इन खाईयों से निकलूंगा।

श्रीमान सुखदेव जी इंग्लैंड से भी हमारा बहुत ध्यान रखते हैं। यहां पर जो सहूलतें मिली हैं, उनके लिए धन्यवादी हूँ।

बूटा सिंह जी कल्याण (रो-रो कर) मुझे भी कुछ लाभ हुआ है। अपने उपकारी नज़र आए हैं। श्रीमान गुरूबख्श जी के उपकार नज़र आए हैं। मैं उनका कर्ज़ा दबाए बैठा हूँ। मैं मामूली बात से चोट खाकर सभा से उदासीन हो गया था। श्रीमान जी ने मुझे बुलाया। और मुझे दुबारा सभाओं से जोड़ दिया है। यदि मैं समाज से दूर हो जाता तो बर्बाद हो जाता। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने मेरी पत्नी के बिमार होने पर मेरी बहुत सहायता की। फरीदकोट हस्पताल में उसे दाखिल कराने के लिए भूखे-प्यासे रहे। चाय तक के पैसे मेरे से नहीं लिए।

मैं श्रीमान तेजराम जी से (रो-रोकर) क्षमा मांगता हूँ कि जो इनका अपमान किया है आगे से मैं ऐसा अपराध नहीं करूंगा। बहुत शर्मिंदा हूँ। उन्होंने दिल के गहरे भावों से क्षमा माँगी।

7) **प्रिंसीपल सरताज सिंह जी केसूपुरा :-** मैं कहने को एक एम. ए., बी. एड. हूँ, परन्तु सम्बन्धों में मैं एक जंग लगे लोहे की तरह हूँ। मैं अपनी माता और पत्नी का अपराधी हूँ।

हमारा 16 एकड़ ज़मीन का मुकदमा चल रहा था। मेरे श्रद्धेय दादा जी, पिता जी, दादी जी ने जिस प्रकार कठिनाईयां सहन की हैं और ज़मीन के लिए पैरवी की, साईकलों पर भाग दौड़ की, लोगों से कर्जे उठाए। मारे-मारे फिरते रहे, वह सारा संग्राम याद आ रहा है। मेरी आहें निकल जाती हैं (वह ज़ोर-ज़ोर से रो रहे थे) इस संर्घष में दादा जी असमय चल बसे मुझे, माता जी और मेरी बहन को खेतों में घास काटना पड़ा ज़मीन के कारण मेरे शेर जैसे चाचा वा बुआ की मौत हो गई। भुआ की नंगीन लाश विरोधियों ने लटका दी। (बहुत दुख से भरकर) क्या कुछ मेरे उपकारियों को सहना पड़ा। याद आ आकर रूलाता रहा। दादी जी रात के 12-12 बजे उठकर रोती थी, चाचा के और भुआ के कपड़े उठाकर रोती थी। मां की सेवाएं याद आ रही हैं। मुझे पढ़ते हुए सुबह उठकर चाय पिलाती। मैं कलास में फर्स्ट आया, मुझे लाल रंग का साईकिल लेकर दिया जो मैंने 12 साल तक चलाया। परन्तु जिस मान सम्मान की वह हकदार थी, मैंने नहीं

दिया। माता के घोर संग्राम वा तपस्या का विलाप करते हुए ब्यान किया। मां के हाथ पत्थर की तरह सख्त हैं। उन्होंने मेरे ऊपर सब कुछ वार दिया है। मेरी पत्नी ने भी मेरी हर मुसीबत वा बिमारी में मेरी सेवा की है। धर्म पत्नी का उपकारी रूप नज़र आया है। उसके सदगुण नजर आए हैं। मेरे माता पिता वा छोटे भाई की सेवा करती हैं। 5 साल में कभी कपड़े, गहने की मांग नहीं रखी। भगवान की कृपा से उनकी सेवाएं नज़र आई हैं। मैं सभा में उनसे क्षमा चाहता हूँ। (पत्नी से पैरों में सिर रखकर क्षमा मांगी) अजीब वातावरण बन रहा था। बहुत गिनती में हृदय पिघल रहे थे और निराले गुरु के आगे झुक रहे थे।

यह सब कुछ मैंने न यूनिवर्सिटी के कोर्सों में और न प्रौफेसरों के लैक्चरों से सीखा है। यह मेरे गुरु की रोशनी का सदका है। वह गुरु महाराज के चरणों में झुक रहे थे और जारोकतार रो रहे थे। स्वर्गीय मण्डल पैदा हो रहा था। सबके हृदय घुल रहे महसूस हो रहे थे।

8) श्रीमान तेजराम जी (गुजरात) मैं 50 वर्ष से गुरु दर से सेवा पा रहा हूँ। गुरु महाराज ने मेरे पिता जी, ताया जी और मामा जी का हुक्का छुड़वाया। यहां आकर दिल नम्र हुआ है। सभाओं में रोता रहा हूँ। गुरु महाराज ने अध्यापकों को बच्चों पर सख्ती करने से रोका है। गुरु का ऋण है। मैं समाज से निराश होकर दूर होकर बैठ गया। श्रीमान जी ने बचाया है। बहुत लाभ हुआ है। एक महीना सत्संग में देना है। कई उच्च वलवले पैदा हुए हैं। मैं चाय छुड़वाता रहता हूँ। होम्योपैथी दवाई मुफ्त देता रहता हूँ। मेरी कुछ उदासीनता कम हुई है। और ज्यादा बचने की कोशिश करूंगा।

9) **श्रीमान नरेन्द्रनाथ जी धीमान :-** यहां आकर अपनी कमीयां नज़र आई हैं। एक दो नहीं बहुत सी कमीयां दिखाई दे रही हैं। शरीर, धन और विद्या के विचार से कमजोर हूँ। दिल में आता है कि गले में ढोल पाकर गुरु की खुशखबरी लोगों तक पहुँचाऊ, बताऊँ कि गुरु की ज्योति और शक्ति कैसी है, जो पापी रुहों को बचाती है।

10) **श्रीमती दविन्द्र कौर जी :-** मैं गुरु महाराज की अति धन्यवादी हूँ कि उन्होंने मेरे पति को अच्छा बना दिया है। मुझे कोई तकलीफ नहीं। वह मेरा बहुत ख्याल रखते हैं।

श्रीमान हरदेव सिंह जी :- मुझे महोत्सव से इतना लाभ नहीं हुआ, सरताज जी के भाव प्रकाश ने मुझे हिला दिया है। मेरे ऊपर यह तीर की तरह लगा है। मैंने कम से कम 6 दफा अपनी पत्नी पर हाथ उठाया है। मेरे हृदय पर तीर लग रहे हैं। श्रीमान गुरुदेव राज मेरे उपकारी हैं। हमारे घर में कलेश होने पर बहुत सहायता करते हैं और हमें बचाते हैं। मैं अपनी पत्नी से अपने गन्दे व्यवहारों के लिए क्षमा मांगता हूँ। (पत्नी से हाथ जोड़कर, झुककर क्षमा मांगी) मैं बहुत निकम्मा इन्सान हूँ। माता पिता का अपमान करता हूँ।

12) **श्रीमान अनिल कुमार जी पदमपुर :-** मैं पुस्तकों का अधिक पाठ करूंगा, साधन करूंगा। आत्मा हित के लिए संग्राम करूंगा, लोगों को सभाओं में लाने का संग्राम करूंगा।

13) **श्रीमान रजिन्द्र जी देहरादून :-** (नऐ सेवक) धीमान जी के मुझ पर बहुत उपकार हैं जो मुझे देव धर्म रूपी रेलगाड़ी में सवार करवा दिया है।

अपनी घर वाली का शुक्रिया किस प्रकार करूं? मैं तो तलाक देने के योग्य था। शराबी होकर सड़क पर नालियों में मदहोश होकर मरे कुत्ते की तरह अकसर पड़ा रहता था। मेरी पत्नी जो बी. ए. पास है, सब्जियां बेच बेचकर बच्चे सम्भाले। लोग कहते थे कि इसको छोड़ दे, परन्तु इसने मुझे नहीं छोड़ा। गुरु की कृपा से घर फिर बन रहा है और बहुत कुछ धीरे-धीरे प्राप्त हो रहा है। मैं सदा गुरु चरणों से जुड़ा रहूंगा, इसी में मेरी ख़ैर है।

14) **श्रीमती सुरजीत कौर जी केसूपुरा :-** (नयी सेविका) मुझे सेवक बनने की बड़ी खुशी है। मैं 4 वर्ष पहले ही यहां आई थी। मेरे धर्म सम्बन्धियों ने मुझे बहुत कहा कि सेवक बन जाओ, पर मैं कहती थी कि नहीं मैंने नाम ले रखा है। परन्तु इतने वर्ष सभाएं सुनते-सुनते गुरु महाराज की रोशनी और बल मिला है जो मैं सेवक बन गई। मेरे पति ने बेशक सभा में मेरे से क्षमा मांगी वह तो मेरे लिए देवता जैसे हैं। मेरे भीतर भी गुस्सा बहुत है, गुस्से में आकर मैं बहुत गल्तियां का कारण बनती हूँ। गुरु महाराज जी की शक्ति मिले, हम दोनों के अच्छे बनने से हमारी जिन्दगी सुख की जिन्दगी हो गई है। श्रीमान गुरुदेव राज जी की मैं बहुत धन्यवादी हूँ कि जो हमारे रोज़ाना के छोटे-छोटे झगड़े आकर निपटाते हैं। हमें अच्छी-अच्छी बातें बताकर प्यार से रहना सिखाते हैं।

दोनों श्रीमान जी ने जो पिछले दिनों में हमारे सभाएं करवाई तो उनसे भी मुझे बहुत लाभ हुआ है। बहुत धन्यवादी हूँ।

भाव प्रकाश के बाद समय बहुत हो गया था। सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने हाजरीन को कहा कि अब यह सभा बन्द करते हैं। आप जो कोई भाव प्रकाश करना चाहते हैं, वह लिखकर दे सकते हैं। इसके बाद सभापति जी ने गुरु महाराज और नेचर की विकासकारी शक्तियों का गहरे भावों से धन्यवाद किया कि जिनकी सहायता के कारण महोत्सव मुबारक बहुत शानदार और उम्मीदों से बढ़कर हर पक्ष में कामयाब हुआ। क्या यात्रीयों की हाजरी, क्या सभाओं और दूसरे प्रोग्राम, क्या दान, क्या सेवक बनने के पक्ष में, क्या रिहायश वा खाने के मामले में, सब प्रबन्ध बहुत सन्तोष जनक रहा।

धर्मशाला के प्रबन्ध का भी गहरे भावों से धन्यवाद किया जो, इतनी कीमती जगह महोत्सव के लिए प्रदान करते हैं, और हर प्रकार का सहयोग देते हैं।

फिर हाजरीन और सभाएं कराने वालों का, लैक्चर देने वालों का भी धन्यवाद किया। भजन गाने वालों का और पण्डाल सजाने वालों का भी हार्दिक धन्यवाद किया।

खाना बनाने वालों और पानी गर्म करने वालों का धन्यवाद किया। नेचर का भी धन्यवाद किया, जो बारिश आदि से कोई विघ्न नहीं पड़ा।

दानी साहिबान का भी धन्यवाद किया। उसके बाद देव आरती का पूरे जोश के साथ गान किया और चार बार जय ध्वनि करके, इस पावन पर्व को सम्पन्न किया गया।

(एक सेवक)

WPP - Regd. Postal No.Pb (0078) 2006 ***Published on 5th of the month***
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88 20 जनवरी - 2008

कल्याण सत्संग

पाठक गण जानकर हर्ष लाभ करेंगे कि हर वर्ष की तरह इस साल भी कल्याण मल्लका (भटिंडा) में खास सत्संग वा माता पिता दिवस 7 फरवरी रात से आरम्भ होकर 10 फरवरी दोपहर तक रहेगा। कृप्या पधार कर लाभ उठाएं।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts